IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

जनजातीय जीवन पर वन औषधीयों का प्रभाव

अरुणा मिश्रा

शोध सारांश - मानव प्रकृति की अनमोल रचना हैए प्रकृति में जन्म लेकर उसने जीवन के संघर्ष का रहस्य प्रकृति से सीखा है। जल जंगल जमीन वृक्ष एवं उनके अंग उसके प्रथम सहचर हैं। पौधे उसके जीवन के प्रत्येक क्रियाकलापों में सहभागी रहे हैं। पेट की भूख मिटाने से लेकर सभ्यता संस्कृति धर्म औषधि आदि जीवन एवं विकास से जुड़े समस्त पहलुओं में वह पौधों का उपयोग करता चला आ रहा है प्राचीन काल से ही वनस्पतियों का उपयोग औषधि में होता आ रहा है।

मुख्य शब्द - जनजातीय जड़ी बूट वनस्पतीय वन औषधीयां बीमारी ।

प्रस्तावना

जनजाति समाज आज भी प्रगति के अति निकट है। यह प्रकृति के सहारे प्राकृतिक पर्यावरण में रहकर स्थिति की जय व अजय अर्थात जीव जगत एवं निर्जीव पृथ्वी पर पाए जाने वाले संसाधनों पर आत्मनिर्भर हैं। सतना जिला में अभी बहुसंख्या में जनजातीय आवासित हैं। जिनका जीवन आज भी प्रगति प्रदत्त संसाधनों पर निर्भर है। जीव जगत की तरह वनस्पति जगत हमारी प्रगति के अभिन्न अंग हैं। सच कह तो प्रकृति का नाम लेते ही आंखों के सामने पेड़ पौधे बताएं और झाड़ियां ही सामने आती हैं। शास्त्रों में कहा गया है। वनस्पति जगत का कोई भी पौधा ऐसा नहीं है। जिसका कोई औषधि महत्व नहीं हो वनस्पति जगत के रहस्यमय गुण मानव जाति को प्राचीन काल से आकर्षित करते हैं।सतना जिला के पार्वती बनी अंचलों में जनजाति एवं ग्रामीण समुदाय निवास करता है। यह गांव बिहार बनो और दुर्गम पहाड़ों स्थान में बसे हैं। जहां कोई आधुनिक सुविधा नहीं प्राप्त है। लेने का पर्याप्त शुद्ध पेयजल नहीं यातायात या संचार के संचार के साधन नहीं है। शिक्षा की संक्षिप्त व्यवस्था नहीं तथा चिकित्सा हुआ स्वास्थ्य सेवा की कोई अच्छी सुविधा नहीं है। विषम परिस्थितियों और दुश्वार जीवनचिकित्सा का मुद्दा अहम महत्व रखता है। सतना जिला के इन इलाकों में उन जन्म जाति वर्गमेंजहां चिकित्सा की कोई व्यवस्था नहीं है। कोई अस्पताल नहीं है। कोई चिकित्सक डॉक्टर नहीं है।कोई स्वास्थ्य केंद्र उप केंद्र नहीं है। जहां स्वास्थ्य के बारे में कोई जानकारी नहीं है। वहां लोगों का इलाज कैसे होता है। या कैसे हो एक अहम प्रश्न है।

औषधि वनस्पतियों की दृष्टि से सतना जिला व आसपास के क्षेत्र में अमरकंटकएबांधवगढ़एचित्रकूट.धारकुंडी एकुसमी एबगदराएछुहिया.रगोली आदि ऐसे महत्वपूर्ण स्थान हैं जहां औषधि पौधे बहुत ज्यादा मात्रा में आज भी विद्यमान है। अर्थात वन संप्रदाय और औषधि वृक्षों के दृष्टिकोण से यह एक समृद्ध क्षेत्र है। वर्तमान में कुछ औषधि वनस्पतियां जैसे अश्वगंधाए सर्पगंधाए गिलोयए आंवलाए बेल एभृंगराजए बहेराए हराए काली मूसली सफेद मूसली एसतावर ए बैचांदीएमालकांगनीए ब्राह्मी.कालमेघ ए अश्वगंधा एचित्रक आदि जिले के पहाड़ी क्षेत्रों में वनों में पाई जाती हैं। क्षेत्र में पाई जाने वाली इन औषधि वनस्पतियों का उपयोग आयुर्वेदिक पद्धति में भी किया जाता है।

जनजातीय औषधियां

वनस्पतीय औषधीयां पेड़ पौधे वृक्ष, पौद झाड़ियां फूलदार लता एवं कंदमूल से उपलब्ध होती हैं साथ ही कुछ औषधीय को बनाने में जीव जंतु के अवशेष का भी उपयोग होता है सतना जिला में ऐसी औषधि पौधों एवं जड़ी बूटियां का प्रचुर भंडार है इनका उपयोग प्रयोग इस क्षेत्र के लोग विशेष कर जनजातीय विभिन्न रोगों के उपचार के लिए करते हैं इसलिए बोलचाल की भाषा में इन्हें जनजाति औषधियां भी कहते हैं जड़ी बूटियां द्वारा चिकित्सा पद्धति को होड़ोपैथी नाम दिया गया है एलोपैथी होम्योपैथी की तर्ज पर है।

सफेद मूसली

सफेद मूसली एक अति महत्वपूर्ण है औषधि के रूप में सफेद मूसली का कांड कंद प्रयोग किया जाता है यह एक ऐसी जड़ी बूटी मानी जा गई है जिसमें किसी भी प्रकार की तथा किसी भी कारण से आई शारीरिक शिथिलता को दूर करने की क्षमता पाई जाती है यह इतनी पौष्टिक तथा बलवर्धक होती है कि इसे दूसरे शिलाजीत की संज्ञा दी जाती है सफेद मूसली एक बहुत ही उपयोगी पौधा है जो कुदरती तौर पर बरसात के मौसम में जंगलों में उगता है सफेद मूसली की जड़ों का इस्तेमाल आयुर्वेदिक और यूनानी दवाइयां को बनाने में किया जाता है यह एक ऐसी दिव्य औषधि है जिसमें किसी .भी कारण से मानव मात्र में आई कमजोरी को दूर करने की क्षमता होती है।

औषधि गुण.

सफेद मूसली एक महत्वपूर्ण रसायन तथा एक प्रभाव औषधि पौधा है। इसका उपयोग खांसी अस्थमा बवासीर चर्म रोगों पीलिया पेशाब संबंधी रोगों आदि के उपचार हेतु भी किया जाता है।

सफेद मूसली को मानव मात्र के लिए प्रकृति द्वारा प्रदत्त अमूल उपहार कहा जाए तो शायद अति संयुक्त नहीं होगा अनेकों आयुर्वेदिक एलोपैथिक तथा यूनानी दवाइयां के निर्माण हेतु प्रयुक्त होने वाली इस दिव्य जड़ी बूटी की विश्व भर में वार्षिक उपलब्धता लगभग 500 तन है जबकि इसकी मांग लगभग 35000 टन प्रतिवर्ष आज की गई है यह औषधि पौधा प्राकृतिक रूप से हमारे देश के जंगलों में पाया जाता है परंतु आधाधुंध तथा अपरिपकता विदोहन के कारण अब यह पौधा लुप्त होने की कगार पर है। यही कारण है। कि अब इसकी विविध खेती करने की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित हुआ है।

गुड़हल

का पुष्प एक हर दुहरा तिहरा लाल श्वेत या स्वताभ लाल बैंगानी पीला नारंगी इत्यादिकाई रंगों का होता है। स्वेताभ या सफेद लाल रंग के पुष्प वाला गुड़हल विशेष गुणकारी होता है इसकी केसर बाहर निकली हुई अलग से दिखाई पड़ती हैं। गुलहर की मुख्यतः दो प्रजातियां होती हैं जपा बड़ी जपा छोटी

इसके पुष्प में नाइट्रोजन वास पक लगे फूजिलेज कैल्शियम फास्फोरस फास्फोरस लाहौर तत्व विटामिन बी तथा सी पाया जाता है।

औषधि गुण.

गाय के मूत्र में गुड़हल के फूलों को पीसकर सिर में लगाने से बाल बढ़ते हैं। तथा गंजापन दूर होता है।

गुड़हल की जड़ को साफ कर धोकर एक-एक इंच के टुकड़ों में काटकर रख ले दिन में तीन से चार बार एक-एक टुकड़ा चबाकर थूकते जाए एक-दो दिन में ही छालों में आराम मिलेगा।

एक चम्मच पुष्प चूर्ण को एक कप दूध के साथ प्रातः सायं नियमित रूप से सेवन करते रहने से कुछ ही माह में रक्त की कमी दूर होकर शारीरिक स्फूर्ति व बल वृद्धि होती है।

हानिकारक- अधिक मात्रा में सेवन करने से यह आंखों में क्रमि उत्पन्न करता है। यह शीत प्रकृति वालों के लिए हानिकारक है। हानि निवारणाअर्थ काली मिर्च मिश्री का सेवन करना चाहिए।

आँवला

आँवलाछोटा या मझोल होता है इसके पत्ते बहुत छोटे और पास पास लगे होते हैं। जो हरा होता है। फूल केलई रंग के और अधिकतर पत्तों के नीचे की ओर छोटे गुच्चो में लगते हैं। फल हरे सरस होते हैं। उन पर हल्के रंग की धारियां सी होती हैं। फल में बीज होते हैं।आँवला कई गुण से परिपूर्ण है। उसे औषधि गुणवाला फल के रूप में जाना जाता है। उसका उत्पादन के लिए बहुत अधिक श्रम भी नहीं लगता है।वृक्ष सतना जिले के क्षेत्र में सभी जगह पाए जाते हैं। आवला विशेष कर जंगल में पाया जाता है। इसका बागानों और घर में भी रोपण किया जाता है इस तरह के वृक्षों के फल बड़े होते हैं।अध्ययन के क्रम में पाया गया कि वनों में इसका फल नष्ट भी हो जाता है। और आसपास के जनजाति लोगों द्वारा इसका उचित उपयोग नहीं हो पता है।आजकल इसकी खेती भी होने लगी है।

औषधि गुण

आँवला के फूल जड़ एवं छाल सभी में कुछ ना कुछ औषधीय गुण है।

आँवला के फलों में से बना सिरका अपच रक्त क्षीणता कुछ प्रकार के हृदय रोग तथा जुकाम में उपयोगी होता है।

इसमें विटामिन सी प्रचुर मात्रा में होने के कारण इसकी कमी से होने वाले रोग सकवीमें यह आँवला लाभप्रद होता है।

इसके सूखे फल अतिसार एवं पेचिश में उपयोगी हैं इसके बीच दमा और उदर की बीमारियों में उपयोगी बताए जाते हैं।

नीम

नीम का पेड़ सदा हरित एवं बड़ा होता है। इसके पत्ते छोटे-छोटे हर एवं संयुक्त रूप से होते हैं। इसके फूल हल्के हरे एवं पीले सफेद गुच्चो में होते हैं। फल गोल कैप्सूल जैसे आकार का कच्छ में हरएवंपकने पर पीला होता है। नीम का पेड़ पूरे सतना जिला के गांवों शेहरो जंगलों एवं मैदाने में पाया जाता है।

औषधीय गुण

नीम का पत्ता पित्त निवारण में औषधि के रूप में प्रयोग किया जाता है जिस व्यक्ति को अत्यधिक पित्त हो गया है उसे व्यक्ति को खाली पेट नीम के पत्ते को पीसकर आधा गिलास पिलाने से लाभ पहुंचता है।

खुजली खाज में नीम के पत्ते को पानी में उबालकर स्नान करते समय प्रभावित अंगों को रगड़ रगड़ कर साफ करने से लाभ होता है।

चेचक रोग में भी नीम के पानी से स्नान करना लाभदायक है स्वत कुस्ट रोग में नीम के भीतरी छाल को पीसकर कच्ची हल्दी के साथ काढ़ा बनाकर लगाने से 15 से 20 दिन में ठीक होता है।

नागफनी

यह बालू पर आसानी से उगने वाला लंबा कांटेदार गोल पौधा होता है। इसका तन चपटा होता है इसका पूरा तनाव 4ए5ए6 की संख्या में नुकीला और मजबूत होता है इसका रंग हरा तथा फुल पीला होता है इसके तने से ही दूसरी नई कली के रूप में विकास होता है। यह सतना के कांके रियली एवं बालू मिट्टी युक्त स्थान पर खासकर जंगलों में पाया जाता है। लोग इसे खेतों की मेढ़ आदि में भी लगते हैं।

औषधीय गुण

इसकी टहनी को पीसकर चर्म रोग में लगाने से लाभ होता है। यदि किसी की उंगली में चोट लगा है। और अंदर ही अंदर पक गया तो भी ऐसी स्थिति में इस पीस कर लेप लगाने से वह स्थान ठंडा होकर ठीक हो जाता है। कान दर्द की स्थिति में एक दो बूंद देने पर लाभ होता है।

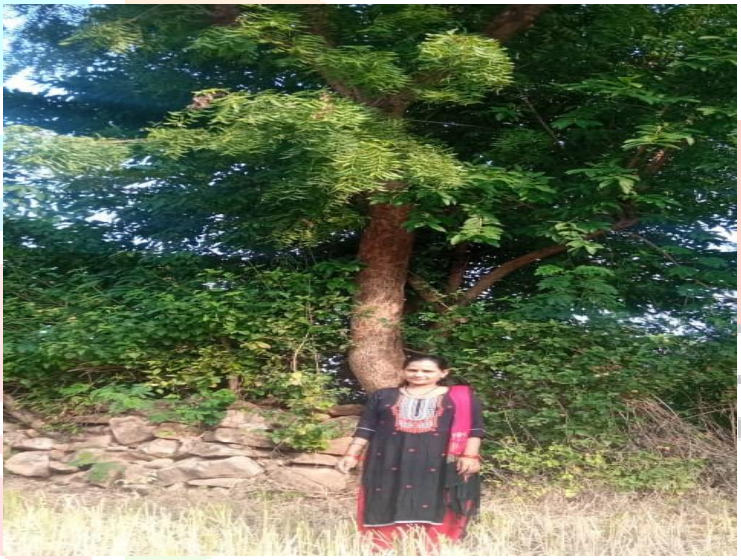

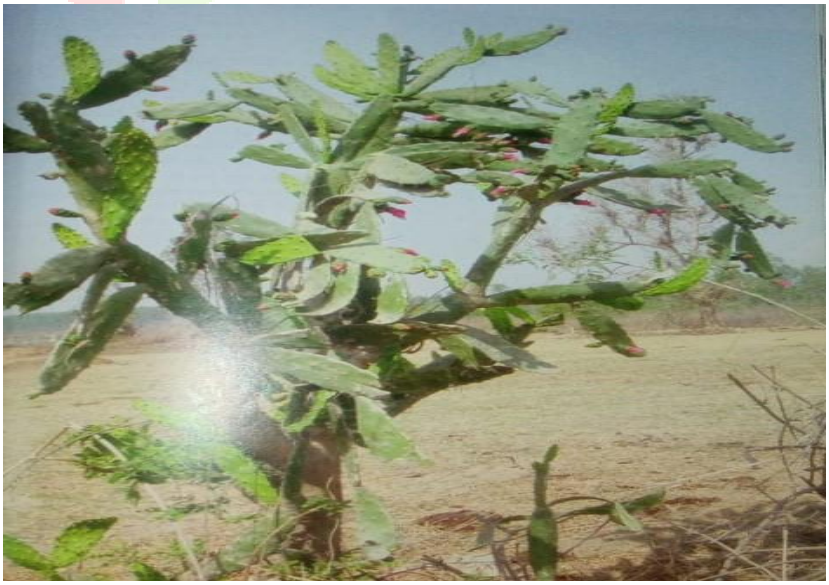

बेल

बेल का वृक्ष आकर में मध्यम एवं कुछ बड़ा होता है। इसके पत्ते हरे रंग के तथा डंठल में तीन चार पत्ते संयुक्त रहते हैं। इस वृक्ष के तने एवं शाखाओं में नुकीले कांटे होते हैं। इसके पत्ते सुगंधित होते हैं। फूल छोटे एवं हल्के हरे सफेद गुच्चो में होते हैं। इसके फल कठोर भीतरी भाग गुदेदार लसलसन खाने में स्वादिष्ट होता है। इसके पेड़ सतना के शहरों गांवों मैदाने तथा जंगलों पहाड़ों में पाए जाते हैं।

औषधि गुण

बेल का शरबत पीने से पाचन शक्ति में वृद्धि भूख लगा एवं पेट की शिकायत दूर होती है। इसके लसा में पेकिटन पाया जाता है।जोलाभ दायक होता है इसके बीज को पीसकर खाने से कब्ज दूर होता है। बेल के पत्ते तथा जड़ में एंटीबायोटिक तत्व होते हैं।

प्रमुख बीमारियों का इलाज जड़ी बूटियों के माध्यम से

गले का दर्द - गर्म पानी में नमक मिलाकर गले की सिकाई की जाती है

पेट जलने पर - तेंदू की जड़ पीसकर खिलाई जाती है।

दस्त लगने पर - साल वृक्षों की गोंद पीसकर हल्दी के साथ पिलाई जाती है।

आंख आने पर - जरिया पट्टी चबाकर आंख पर फूंकते हैं।

मोती झिरा - यह बीमारी का इलाज वनधुरिया बेल की जल के द्वारा तथा लिप्टिस का काढ़ा पीसकर पिलाया जाता है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

सतना जिले की जनजातियों द्वारा वन आधारित चिकित्सा का प्रयोग करने की प्रवृत्ति होती है। यहां के जनजाति प्राकृतिक चिकित्सा पदार्थ का उपयोग प्राथमिकता मानते हैं। उन्हें वन के पौधे जड़ी बूटियां पत्तियों और वनस्पतियों से वने चिकित्सा उपकरणों का बहुत महत्व होता है। इन लोगों का वन्य जीवन और पर्यावरण के साथ गहरा संबंध होता हैए और उन्होंने वनस्पति औषधीय के प्रयोग की विशेषता को समझा है यह आदिवासी समुदाय अपनी परंपरागत ज्ञान योगिक जानकारी और अनुभव पर आधारित वनस्पति चिकित्सा प्रथाओं का उपयोग करती हैं इन जनजातियों में कई चिकित्सा प्रणालियों और आयुर्वेदिक औषधीय का प्रयोग होता है। जनजातियों के लोग यह मानते हैंए कि वन के पौधों का उपयोग करके पर अपनी शारीरिक और मानसिक समस्याओं का इलाज कर सकते हैं। इसके अलावा यह चिकित्सा पदार्थ का उपयोग उनके जीवन शैली को स्वस्थ और संतुलित बनाने में भी मदद करता है। वन आधारित चिकित्सा पदार्थ का उपयोग स्थानीय जनजातीय की संस्कृति परंपरा और धार्मिक धार्मिक आदर्शो का महत्वपूर्ण हिस्सा है और इसे उनके संरक्षण और समर्थन की जरूरत होती है। इन जनजाति समुदायों में वनस्पति आधारित चिकित्सा विज्ञान बहुत महत्वपूर्ण है।

जनजाति औषधि सस्ती सुलभ एवं हानि रहित होती होती हैं किंतु सही जानकारी के अभाव में इनका प्रयोग हानिकारक भी हो सकता है आता है बिना वैद्य निर्देश के प्रयोग न करने की सलाह या सुझाव ध्यान में रखने योग्य है जड़ी बूटी वाली औषधीय के प्रयोग में अनुपात मंत्र समय सेवन विधि आदि का बड़ा महत्व है। जिसकी जानकारी अनुभवी वैद्य को ही रहती है यह बहुत प्रसंसनीय एवं व्यवहारिक लगता है की महंगी दुर्लभ चिकित्सा के स्थान पर जनजाति समाज में परंपरागत परंपरागत चिकित्सा को लोकप्रिय बनाया जाए। इसके लिए कुछ सुझाव पर ध्यान देना आवश्यक है।

जड़ी - बटियों तथा इनसे बनी औषधीयों के उचित संरक्षण एवं भंडारण की व्यवस्था करनी जरूरी है।

इन जड़ी बूटियों का जनजाति औषधीय का वैज्ञानिक परीक्षण किया जाना चाहिए।

रोगों के सही निदान औषधि निर्माण से वन विधि मात्रा समय अनुपात उपचार परिचर्चा आदि सुनिश्चित करने के लिए अनुभवी वैद्य का परामर्श लिया जाना चाहिए।

लुप्त हो रही जड़ी बूटियों को खोज कर एलाकर नर्सरी तैयार करना चाहिए।

कुछ का परीक्षण प्रयोग हो चुका है वैसी औषधीय को मानक औषधि कोषों में स्थान दिया जाना चाहिए।

जनजाति क्षेत्र में अधिकांशतः दवा बनाने की विधि त्रुटि पूर्ण है। और प्रयोग भी सही ढंग से नहीं होता है। मात्रा अनुमान या अंदाज पर निश्चित कर लिया जाता है। इसमें सुधार लाने एवं उन्नत बनाने का प्रयास किया जाना चाहिए इसके लिए समुचित शिक्षण प्रशिक्षण की व्यवस्था होनी चाहिए।

बहुत कम प्रयास और थोड़े खर्चे में वनस्पतिय औषधीयों को सर्वसाधारण के लिए उपयोगी एवं सुलभ बनाया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

बघेल डॉक्टर गुलाब सिंह भारती बन का संग्रह मूल्यांकन योजना

शर्मा डॉक्टर बिमला चरण ट्राइबल ज्योग्राफी 1678

सिंह सीताराम वृक्ष हमारे परम सहयोगी कुरुक्षेत्र जून 1665

दास रामजीवन लघु पदार्थ का कार्य एवं उससे लाभ रिपोर्ट1680

हेंब्रम जी पी 1664आदिवासी औषधि होड़ोपैथी

तिवारी डॉ.दीनानाथ 2000 जड़ी बूटियों का संसार प्रभात प्रकाशन दिल्ली

आचार्य बालकृष्ण आयुर्वेद जड़ी- बूटी रहस्य भाग- 2

पर्यावरण एवं जनजाति अस्तित्व के लिए समीकरण शोध पत्रिका शासकीय महाविद्यालय अंबिकापुर 1995